

देव स्तुति

*वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, भविजन की अब पूरो आस ।
*ज्ञान भानु का उदय करो, मम मिथ्यात्म का होय विनास ॥

*जीवों की हम करुणा पालें, झूठ वचन नहीं कहें कदा ।

*परधन कबहुँ न हरहुँ स्वामी, ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा ॥

*तृष्णा लोभ न बढ़े हमारा, तोष सुधा नित पिया करें ।

*श्री जिनधर्म हमारा प्यारा, तिस की सेवा किया करें ॥

*दूर भगावें बुरी रीतियाँ, सुखद रीति का करें प्रचार ।

*मेल-मिलाप बढ़ावें हम सब, धर्मोन्नति का करें प्रसार ॥

*सुख-दुख में हम समता धारें, रहें अचल जिमि सदा अटल ।

*न्याय-मार्ग को लेश न त्यागें, वृद्धि करें निज आत्मबल ॥

*अष्ट करम जो दुःख हेतु हैं, तिनके क्षय का करें उपाय ।

*नाम आपका जपें निरन्तर, विघ्न शोक सब ही टल जाय ॥

*आत्म शुद्ध हमारा होवे, पाप मैल नहिं चढ़े कदा ।

*विद्या की हो उन्नति हम में, धर्म ज्ञान हूँ बढ़े सदा ॥

*हाथ जोड़कर शीश नवावें, तुमको भविजन खड़े-खड़े ।

*यह सब पूरो आस हमारी, चरण शरण में आन पड़े ॥